सत्यमेव जयते

शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF **EDUCATION**

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी विभाग, ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारतीय शिक्षण मंडल

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

'भारतीय भाषाओं की सामासिकता'

09-10 जनवरी, 2025

आयोजक

हिंदी विभाग

ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट

मान्यवर,

हिंदी विभाग, ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारतीय शिक्षण मंडल के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय भाषाओं की सामासिकता' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में आप सादर आमंत्रित हैं।

संगोष्ठी के संबंध में :

भाषा सांस्कृतिक विकास की एक अहम कड़ी है। भारत जैसे बहुभाषिक और संस्कृति-समृद्ध देश में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है। "कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी" जैसी जनश्रुति वाले इस देश में भारत की गौरवमयी ज्ञान-परंपरा की विरासत अंतर्निहित है। जो जाति भाषिक दृष्टि से जितना समृद्ध और वैविध्य होती है, वह जाति सदियों तक अक्षुण्ण बनी रहती है। भारतीय सभ्यता के समानांतर में कई सभ्यताएँ अस्तित्व में आईं और विलुप्त हो गईं। भारत की सनातन संस्कृति यदि अपने मूल स्वरूप में आज भी तीव्र वेग से गतिमान है तो इसमें भाषा की भूमिका भी अग्रणी है। श्रुति-परंपरा के माध्यम से सदियों तक भारतीय ज्ञान-परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी होते हुए नित्य नए-नए सोपानों को छूती हुई इतना बड़ा स्वरूप धारण कर चुकी है कि कई विदेशी भाषाओं की जड़ें भारतीय भाषाओं से जुड़ती हैं। आज तकनीकी दृष्टि से जब हम समृद्ध हो रहे हैं, ऐसे समय में भारतीय ज्ञान-परंपरा के सबल पक्षों पर पुनर्विचार करने का समय आ गया है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 2020 में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने को प्रमुखता दी गई है। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के 'विजन' को हम तभी साकार कर सकते हैं जब हम अपनी सांस्कृतिक विरासत के मध्य आधुनिक भारत के सृजन का रास्ता तलाशेंगे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत के समानांतर ओड़िशा प्रांत में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में ओड़िया, हिंदी के साथ-साथ संथाली, कुई, देशिया, संबलपुरी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्यिक-सांस्कृतिक गरिमा की तलाश, प्रोत्साहन एवं भाषाई संरक्षण इस दो दिवसीय सेमिनार का मुख्य उद्देश्य है। भारत की भाषाई विविधता, विरासत और उनके अंतःसंबंधों को दर्शाने के लिए कला प्रदर्शनी, संगीत, भाषण, नाटक के साथ-साथ अलग-अलग भाषाई क्षेत्रों के पहनावे, खानपान की विविधता एवं विरासत को दर्शाने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना इस कार्यक्रम की प्रमुख कार्यसूची है। इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों में अपनी मातृभाषा की श्रेष्ठता पर गर्व की अनुभूति होगी । इसके माध्यम से नयी पीढ़ी के चतुर्दिक विकास के लिए मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने के सपने एवं उसकी सफलता को साकार किया जा सकेगा। यही इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य है।

संगोष्ठी के उप विषय :

1. भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ
2. भारतीय भाषाओं में क्षेत्रीय विविधता और एकता
3. भाषाओं का विकास और उसका समाज पर प्रभाव
4. भाषायी सहअस्तित्व और बहुभाषिकता
5. भाषाओं का साहित्यिक संगम
6. सूचना प्रौद्योगिकी और भारतीय भाषाएँ
7. भाषायी एकता और राष्ट्रीय पहचान
8. भाषा नीति और भारतीय भाषाओं का भविष्य
9. शिक्षा में भारतीय भाषाओं का स्थान

10. भारतीय भाषाओं में सामासिकता और आधुनिकता
11. विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद और संवाद की चुनौतियाँ

हिंदी विभाग के संबंध में :

ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय के भाषा संकाय के अंतर्गत हिंदी विभाग की स्थापना सत्र 2015-16 में हुई। जहाँ हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई शुरु की गई। प्रारंभ में हिंदी विभाग कतिपय अंशकालीन अध्यापकों को लेकर आगे बढ़ता रहा। तत्पश्चात सन् 2023-24 में चार पूर्णकालिक अध्यापकों की नियुक्ति से विभाग की गति बदली। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा और साहित्य के अतिरिक्त भारतीय साहित्य, शोध-प्रविधि, अनुवाद विज्ञान, तुलनात्मक साहित्य, लोकसाहित्य और मीडिया अध्ययन आदि जैसे समसामयिक विषयों के माध्यम से विद्यार्थियों की अंतश्चेतना को प्रखर बनाने के लिए विभाग प्रयासरत है। इसी क्रम में ओड़िशा के महान विभूतियों 'सप्तसाहित्य रथी' की साहित्यिक, सांस्कृतिक धरोहर को हिंदी में अनुदित कर विश्व को उत्कल संस्कृति से अवगत कराना विभाग का ध्येय है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उत्कलमणि गोपबंधु दास एवं उत्कल गौरव मधुसूदन दास रचनावली का अनुवाद कार्य प्रगति पर है। उल्लेखनीय है कि विभाग के कई विद्यार्थी वर्तमान समय में विभिन्न सरकारी एवं निजी संस्थानों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। विगत वर्षों में साहित्यिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आदि के समानांतर हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का 75 वाँ अधिवेशन का विशेष आयोजन भी विभाग की उपलब्धी रही। कुलपति महोदय के सुयोग्य मार्गदर्शन में विभाग के समर्पित अध्यापक एवं उत्साही विद्यार्थियों की महत्वाकांक्षा है - हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन के माध्यम से कोरापुट की जनजातीय भाषा, संस्कृति के अध्ययन के साथ ही बहुभाषिकता एवं भारतीय साहित्य की एकता विकसित हो।

विश्वविद्यालय के संबंध में :

ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूओ) की स्थापना वर्ष 2009 में संसद के अधिनियम के अंतर्गत गई थी। अपनी स्थापना के बाद से ही विश्वविद्यालय ने मानविकी, भाषा, सामाजिक विज्ञान और बुनियादी एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान में ज्ञान का प्रसार एवं उन्नयन करने का प्रयास किया है। इसका उद्देश्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और अंतरविषयक शोध में नवाचार को बढ़ावा देना और लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं उनके शैक्षणिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास में सुधार पर विशेष ध्यान देना है। विश्वविद्यालय ओड़िशा के कोरापुट जिले के सुनाबेड़ा में स्थित है, जो 430.37 एकड़ भूमि में फैला हुआ है।

भारत और विदेशों में स्थित प्रमुख अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों और उद्योगों के साथ सहयोग/शैक्षिक गठबंधन/भागीदारी स्थापना करना विश्वविद्यालय का विजन है। शिक्षा की उपयुक्त शाखाओं में अनुदेशनात्मक और शोध सुविधाएँ प्रदान करके ज्ञान का प्रसार और उन्नयन करना; अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में एकीकृत पाठ्यक्रमों के लिए विशेष प्रावधान करना; शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और अंतरविषयक अध्ययन एवं अनुसंधान में नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए समुचित उपाय करना; देश के विकास के लिए जनशक्ति को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करना; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए उद्योगों के साथ संपर्क स्थापना करना; लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार तथा कल्याण, उनके बौद्धिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास पर विशेष ध्यान देना विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य है।

वर्तमान में, विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों में चार-वर्षीय और दो-वर्षीय स्नातक कार्यक्रम, पांच-वर्षीय एकीकृत परास्नातक कार्यक्रम, दो वर्षीय परास्नातक कार्यक्रम और शोध कार्यक्रम (पीएचडी) की सुविधा प्रदान करता है। स्नातक कार्यक्रमों में कृषि में बीएससी, पशुपालन और डेयरी में बीएससी और वन प्रबंधन में बीएससी शामिल है। विश्वविद्यालय शिक्षा स्नातक में दो वर्षीय स्नातक प्रशिक्षण कार्यक्रम, गणित में पांच वर्षीय एकीकृत परास्नातक कार्यक्रम और जापानी भाषा में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम की सुविधा प्रदान करता है। नृविज्ञान, जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, कंप्यूटर विज्ञान, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार, लॉजिस्टिक और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, ओड़िया, संस्कृत, समाजशास्त्र और सांख्यिकी में दो वर्षीय परास्नातक कार्यक्रम की सुविधा है। विश्वविद्यालय ने शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग के लिए विभिन्न राष्ट्रीय संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किया है। सभी कार्यक्रमों में प्रवेश राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। हिंदी का उपयोग विश्वविद्यालय परिसर में संपर्क भाषा के रूप में किया जाता है।

शोध पत्र :

शोध पत्र ईमेल - hod.hindi@cuo.ac.in पर दिनांक 08 जनवरी, 2025 तक आमंत्रित हैं।
चयनित शोध पत्रों का प्रकाशन पुस्तक के रूप में किया जायेगा।

पंजीकरण लिंक :

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSd5JXC3AFppz2OiIz9fBkNfIjkk0gqGnJH4H1KjIKEC4rTbg/viewform?usp=dialog

संपर्क सूत्र -

डॉ. चक्रधर पधान :- 6290339263
डॉ. मनोज कुमार सिंह :- 9434332256
डॉ. सुनीत पासवान :- 8535853103
डॉ. श्रीकांत आरले :- 9573565596

स्थान :

संगोष्ठी सभागार,
अकादमिक ब्लॉक-3,
ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट

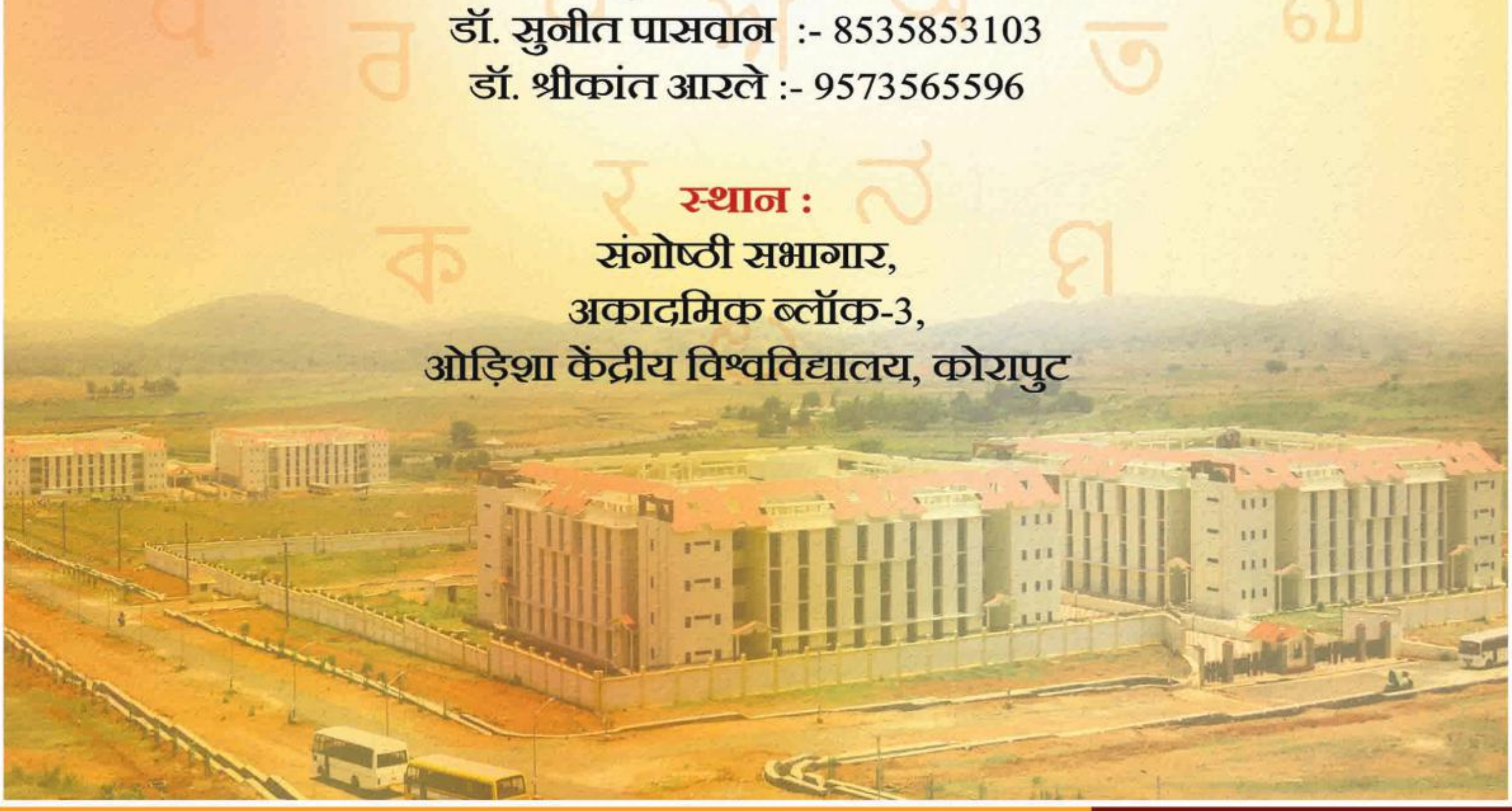

विशिष्ट अतिथि वक्ता :

1. पद्मश्री हलधर नाग, लोककवि रत्न (संबलपुरी), बरगड़, ओड़िशा
2. प्रो. नंदिनी साहु, कुलपति, हिंदी विश्वविद्यालय, हावड़ा, पश्चिम बंगाल
3. प्रो. आर. एस. सर्राजु, पूर्व प्रति कुलपति, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना
4. डॉ. सत्यनारायण पंडा, प्राचार्य, हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कटक
5. डॉ. अजय पटनायक, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, रेवेन्सा विश्वविद्यालय, कटक
6. डॉ. अभिषेक शर्मा, रेवेन्सा विश्वविद्यालय, कटक, ओड़िशा
7. श्री दीपक कुमार पंडा, इतिहासविद, संबलपुर, ओड़िशा
8. डॉ. अरुण मिश्र, मुनिश्वर दत्त पोस्ट ग्रेज्युएट कॉलेज, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश
9. डॉ. राजेंद्र पाढ़ी, आदिवासी भाषा और संस्कृति गवेषणा मंच, जयपुर, ओड़िशा
10. डॉ. सत्यनारायण ठाकुर, मांधाता बाबा महाविद्यालय, मानेश्वर, संबलपुर, ओड़िशा
11. श्री त्रिनाथ खरा, डार्विन मेमोरियल उच्च माध्यमिक विद्यालय, मलकानगिरी, ओड़िशा

संरक्षक

प्रो. चक्रधर त्रिपाठी, माननीय कुलपति

मार्गदर्शक

प्रो. नरसिंह चरण पंडा, अध्यक्ष, भाषा संकाय

प्रो. विभाष चंद्र झा, शैक्षिक एवं प्रशासनिक सलाहकार

प्रो. शरत कुमार पलिता, अध्यक्ष, जैव विविधता एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संकाय

प्रो. भरत कुमार पंडा, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग

डॉ. रमेंद्र कुमार पाढ़ी, अध्यक्ष, छात्र कल्याण

डॉ. अशोक कुमार साहु, अध्यक्ष, गणित विभाग

डॉ. राकेश कुमार लेंका, अध्यक्ष, कंम्प्यूटर विभाग

समन्वयक

डॉ. मनोज कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

संयोजक

डॉ. चक्रधर पधान, अध्यक्ष, हिंदी विभाग

डॉ. श्रीकांत लक्ष्मणराव आरले, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

डॉ. सुनीत पासवान, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग